विचार बिन्दु

अतिथि जिसका अन्न खाता है, उसके पाप धुल जाते हैं। –अथर्ववेद

पुराने प्राकृतिक वनों को बचाना विश्व में वानिकी की सर्वोच्च प्राथमिकता है

ऐसे वन जो विकास के उन्नत चरण में हैं या जहाँ विविध प्रजातियों के पुराने, मोटे और बड़े वृक्षों की बहुतायत है उन्हें दुनिया प्राइमरी फॉरेस्ट्स या ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स के नाम से जानती है। ऐसे वनों के पारिस्थितिक, सामाजिक और आर्थिक महत्त्व पर विश्व भर में बड़ी शोध हुई है। ऐसे वनों की पहचान एक कठिन कार्य है, क्योंकि ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स की अभी भी कोई एक मानक परिभाषा नहीं है। फिर भी इन वनों में प्रमुख प्रजातियों की लंबी उम्र, प्राकृतिक गड़बड़ी का कम से कम होना, मानव हस्तक्षेप का कम होना, छाया-सहिष्णुता या छाया में भी उग सकने वाली प्रजातियों की बहुलता, विशिष्ट संरचनाओं, जैसे बड़े-बड़े पेड़, खोखलों में घोंसले बनाने वाले पक्षियों की उपस्थिति और बहुतायत, भारी-भरकम पुराने वृक्षों के यत्र तत्र गिरे-पड़े संचित सूखे तने, मिट्टी के ऊपर पत्तियों और सूखी टहनियों की मोटी परत आदि लक्षणों के संदर्भ में पहचाना और परिभाषित किया जाता है।

प्राचीन ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स की परिभाषा भले ही अभी तक स्पष्ट नहीं हो पायी हो किन्तु वन विभाग में कार्य करने वाले लोगों को इनकी पहचान है। सबसे पहली बात तो यह है कि यहां पर उस क्षेत्र के सर्वाधिक विशाल और प्राचीन वृक्षों का झुण्ड मिलेगा। दूसरी बात यह है कि इन वृक्षों में एपीफाइट्स तथा आर्किड जैसी विभिन्न प्रजातियां वृक्षों की मोटी शाखाओं में उगती हुयी मिलती हैं। इसके साथ ही ऐसे क्षेत्रों में कैविटी-नेस्टिंग बर्ड्स की भी बहुतायत होती है। इन क्षेत्रों में मिलने वाले बड़े वृक्षों में मधुमक्खियों के छत्ते भी प्राय: देखे जाते हैं। इसके अलावा बड़े वृक्षों के मुख्य तने में छाल में निवास करने वाले विविध प्रजातियों के कीड़े-मकोड़े पाये जाते हैं। सैप्रोजायलिक कवक, लाइकेन तथा कीड़ों की प्रजातियां बड़ी संख्या में सूखी गिरी-पड़ी लकड़ी पर निर्भर होती हैं। ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट के नीचे की मिट्टी की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें पोषक तत्वों की प्राय: कोई कमी नहीं पाई जाती। नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम के साथ सूक्ष्म पोषक तत्व भी प्रचुर मात्रा में मिलते हैं क्योंकि यदि आग, चराई और कटान नहीं हो रहा है तो बायोजियोकेमिकल चक्र सुचारु रुप से चलते हैं। ऐसा संभव है ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स के आसपास कोई नदी नाला या नम भूमि इत्यादि हो। प्राय: यह भी देखा गया है कि ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स में पौधों और प्राणियों की जो प्रजातियां मिलती हैं वे समीपवर्ती वन क्षेत्रों से कुछ भिन्न हो सकती हैं। इन क्षेत्रों में प्राय: बड़े बीजों वाली प्राणी-विकीर्णित वृक्ष प्रजातियों का बाहुल्य होता है।

उष्णकटिबंधीय वनों में जहां प्रजातियों की विविधता और प्राकृतिक वातावरण पर मानव दबाव दोनों ही अधिक हैं, भूमि-उपयोग परिवर्तन जैव-विविधता को गंभीर खतरे में डालते हैं। कृषि, लकड़ी के लिये कटान, उद्योगों की स्थापना और अन्य उपयोगों के लिये उष्णकटिबंधीय वनों के तेजी से बदलाव उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता को नष्ट कर देते हैं। एक शोध जो 138 अध्ययनों की मेटा-एनालिसिस का उपयोग कर की गयी, के परिणाम उष्णकटिबंधीय जंगलों में मानवीय दखल के कारण विक्षोभ और भूमि रूपांतरण से जैव-विविधता पर पड़ने वाले प्रभाव का वैश्विक मूल्यांकन प्रदान करते हैं (देखें, एल. गिब्सन इत्यादि, नेचर, 478(7369):378-381, 2011)। इस अध्ययन में प्राथमिक वनों जिनमें कोई मानवीय दखल नहीं था और बिगड़े वनों जिनमें मानवीय दखल था, में जैव-विविधता का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। यह पाया गया अवक्रमित या बिगड़े वनों में जैव-विविधता की स्थिति तमाम कारणों से बहुत ख़राब थी। यह वैश्विक शोध निर्विवाद रूप से सिद्ध करती है की वन-विनाश के विविध कारणों का उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता पर अत्यंत हानिकारक प्रभाव पड़ता है। इस शोध के परिणाम स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं कि जब उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता को बनाये रखने की बात आती है, तो प्राथमिक वनों का कोई विकल्प नहीं है।

संपूर्ण विश्व के कुल 23 से26 प्रतिशत वन ही अब प्राइमरी या ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स के रूप में बचे हैं। राजस्थान में कई जिलों में ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स अभी भी बचे हुये हैं, हालांकि ऐसे वन उष्णकटिबंधीय शुष्क क्षेत्रों में विशेष रुप से संकटापन्न हैं। संकट के मुख्य कारण आसपास रहने वाली मानव आबादी के पालतू मवेशियों द्वारा चराई, जलाऊ लकड़ी के लिये कटाई और घर बनाने के लिये इमारती लकड़ी की कटाई इत्यादि हैं। ऊपर से प्राकृतिक और मानव-जनित कारणों से आग भी ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स को बड़ी हानि पहुँचती है। कई क्षेत्रों में बड़े वृक्षों की शाखाओं को काट कर साल दर साल चारे के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिये कोटा जिले में नदी-नालों के किनारे के पुराने वनों से अर्जुन (कहुआ, कोहड़ा) के बड़े वृक्षों की शाखाओं को काटकर भैंसों के चारे के रूप में उपयोग होता है। हर साल शाखा कटान के कारण इन वृक्षों में फूल, फल और बीज लगने की प्रक्रिया भी बाधित होती है। बीजों का उत्पादन और विकीर्णन नहीं होने से प्राकृतिक पुनरुत्पादन बाधित होता है। जिन क्षेत्रों में बीजों का उत्पादन होता भी है वहां बीज विकीर्णन करने वाली वन्य-प्राणी प्रजातियां ना होने से अब केवल बड़े वृक्ष ही बचे हैं क्योंकि प्राकृतिक पुनरुत्पादन नहीं के बराबर है। जो भी थोड़ा बहुत पौधे उगते हैं वे भी बड़े होने के पहले ही चर लिये जाते हैं। आग का भी प्रकोप होता है, हालांकि उष्णकटिबंधीय शुष्क वनों में पिछले 30 वर्षों वनों में प्राय: सतही आग ही लगी है। इससे बड़े वृक्षों को भले ही हानि ना होती हो, किंतु बीजों, बिजौलों व प्राकृतिक पुनरुत्पादन को बड़ी हानि पहुंचती है। क्लाइमेट चेंज की दशा में आर्द्र तराई क्षेत्रों के वनों में हर जगह पुराने जंगलों मेंजमीन के ऊपर के जैवभार (बायोमास) में कमी आने की भारी आशंका है। उष्ण कटिबंध में वर्ष 2081-2100 के मध्य तक तापमान बढ़ने के कारण इस कमी का अनुमान 41 प्रतिशत और विश्व स्तर पर 29 प्रतिशत है (देखें, एम. लर्जावारा इत्यादि, कार्बन बैलेंस एंड मैनेजमेंट, 16(1):31, 2021)।

प्राचीन, विशालकाय वृक्षों वाले उष्णकटिबंधीय वन जैव-विविधता की जीती-जागती अनमोल विरासत हैं। इनका संरक्षण वैश्विक प्राथमिकता है। उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता और उससे मानवता को प्राप्त होने वाले सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ बनाये रखना है तो पुराने प्राथमिक वनों का कोई विकल्प नहीं है। इन वनों के प्रमाण-आधारित प्रबंध में निवेश अनिवार्य है।

अरावली पर्वत श्रंखला में पुराने वृक्षों वाले प्राकृतिक वन लोगों की आध्यात्मिक आस्था के स्थान के रूप में भी प्राय: मिल जाते हैं। लोग इन क्षेत्रों को देववनों के रूप में पूजते और संरक्षित करते हैं। आस्था के कारण इन क्षेत्रों में हालांकि वृक्षों का कटान नहीं होता लेकिन पशुओं की चराई के कारण प्राकृतिक पुनरुत्पादन की स्थिति ठीक नहीं है। समस्या यहहै कि जहाँ स्थानीय देवी देवता की मूर्ति रखी गई है वहां वृक्षों को हटाकर बड़े धार्मिक परिसर बनाने का चलन बढ़ रहा है, जिससे वनों और पुराने वृक्षों को हानि होती है।

पुराने वनों का संरक्षण और प्रबंध प्रायोगिक रुप से विशेष महत्व रखता है। इन वनों के अनगिनत लाभ हैं। वनानुभव व पारिस्थितिक पर्यटन, मानव के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य हेतु संसाधन, जैव-विविधता व आनुवंशिक संसाधन का संरक्षण,कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन और भंडारण, भौम-जलस्तर में बढ़त व जल-धाराओं, झरनों व नदियों के रूप में पानी की उपलब्धता, देववनों के रूप में मेंस्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों के वाहक होते हैं। ऐसे वनों के संरक्षण को बढ़ावा देने वाली रणनीतियाँ केवल इन वनों को केन्द्रित कर बनाये जाने के बजाय सम्पूर्ण भू-परिदृश्य के स्तर पर बनाना आवश्यक होता है। पहली बात इनमें बड़े वृक्षों की बहुतायत के कारण बड़ी मात्रा में कार्बन जमा होता है और सैकड़ों साल तक होता रहता है, इसीलिये ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स को विश्व के कार्बन भण्डार के रूप में जाना जाता है। क्लाइमेट चेंज मिटीगेशन के लिए यह भण्डार अति महत्वपूर्ण है (देखें, एस. लुस्स्येर्ट इत्यादि, नेचर, 455(7210):213-215, 2008)। दूसरी बात यह है कि पुराने पेड़ों में अपेक्षाकृत स्थिर विकास दर होती है, जो ग्लोबल वार्मिंग के विरुद्ध उल्लेखनीय प्रतिरोध देती है (देखें, एम. कोलेंगेलो इत्यादि, साइंस ऑफ़ द टोटल एनवायरनमेंट, 801,149684, 2021)। इसके साथ ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे वन अन्य क्षेत्रों में वनों के पुनर्स्थापन के लिये उन प्रजातियों के बीजों और जैव-विविधता के सबसे महत्वपूर्ण स्रोत हैं जो लोगों के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं किन्तु उष्णकटिबंधीय वनों के अन्य क्षेत्रों से स्थानीय रुप से विलुप्त हो चुकी हैं (देखें, डी.एन. पाण्डेय, कन्जर्वेशन बायोलॉजी, 17(2):633-635, 2003)।

इसी बात को ध्यान में रखते हुये राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स को चिन्हित कर माइक्रो-रिजर्व्स घोषित कर उनका संरक्षण व संवर्धन एवं सतत विकास किया जाना आवश्यक है। इन क्षेत्रों के अंदर पुराने और बड़े वृक्षों का संरक्षण और साथ में संपूर्ण क्षेत्र का संरक्षण दोनों को ही ध्यान रखना आवश्यक है। इस कार्य के लिए जो निवेश किया जाना आवश्यक है उसमें चराई और कटाई से बचाव के साथ-साथ यहां सूखी गिरी-पड़ी लकड़ी को भी बाहर निकालने से रोकना आवश्यक है। जैसा कि ऊपर बताया गया है सूखे गिरे-पड़े वृक्ष भी तमाम प्रजातियों के संरक्षण के लिये आवश्यक हैं।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि इन क्षेत्रों में प्राकृतिक पुनरुत्पादन नहीं हो रहा है तो वनों के वितान में जहां खुले स्थान मिल रहे हैं वहां पर उसी प्रकार की प्रजातियों का रोपण आवश्यक है जो ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट में पाई जाती हैं। ऐसी प्रजातियां प्राय: बड़े बीजों वाली और चौड़ी पत्ती वाली होती हैं। बड़े बीज होने से इनका विकीर्णन बड़े शरीर वाले प्राणियों द्वारा ही हो सकता है परंतु चूंकि अनेक क्षेत्रों से बड़े शरीर वाले प्राणी विलुप्त हो चुके हैं इसलिए हमें वृक्षारोपण, सीधी बुवाई और डंडारोपण करना आवश्यक हो जाता है। राजस्थान में बड़े बीजों वाली प्रजातियों में आम, महुआ, जामुन, अर्जुन, बहेड़ा, सादड़, कणज, घटबोर, लिसोड़ा, बीजासाल, खाखरा, कड़ाया, सीताफल, बेल, नीम, कचनार, तेंदू, बिस्तेंदू, गोदल, ऊंबिया, इमली, सागवान, बेर, खजूर, अचार या चारोली, कुसुम, हिंगोट, अरीठा, आदि शामिल हैं। कुछ ऐसी प्रजातियाँ भी उगाना चाहिये जो फलों के लिये प्रसिद्ध हैं, भले ही वे छोटे बीज वाली हों। आँवला, बरगद, कैथगूलर, पीपल, कैर, लिसोड़ा, जाल, खेजड़ी आदि फल के लिये जानी जाती हैं (देखें, डी.एन. पाण्डेय, अरावली के वन्य वृक्ष: वनवर्धन एवं पौधशाला प्रबंध, पृष्ठ 1-24, 1992)।

तीसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स प्राय: अब छोटे कुञ्ज के रूप में ही बचे हैं तो इनका दायरा धीरे-धीरे बढ़ाना आवश्यक है। इसके लिए सबसे उपयोगी यह है कि ऐसे क्षेत्रों को फॉरेस्ट रेस्टोरेशन के लिये चयनित किये जा रहे बड़े क्षेत्रों के अंदर लेकर बड़े दायरे में वृक्षारोपण करना चाहिये। बाहर के दायरे में जहां प्रजाति विविधता कम है या क्षेत्र खाली हो गये हैं वहां पर अर्ली-सक्सेशनल, मिड- सक्सेशनल, और लेट-सक्सेशनल प्रजातियों के मिश्रण का वृक्षारोपण और बुवाई आदि किया जाना उपयोगी रहेगा। जहाँ नमी नहीं है वहां जल और मृदा संरक्षण की विधियों का भी प्रयोग करना आवश्यक है। साथ ही थोड़ी-बहुत वनस्पति जो उस क्षेत्र में हो उसका संरक्षण करना उपयोगी रहेगा। ऐसा करने से धीरे-धीरे ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट का दायरा बढ़ने लगेगा। इस रणनीति का एक लाभ यह भी है कि क्षेत्र में पक्षियों द्वारा विकीर्णित होने वाले बीजों का विकीर्णन भी पूरे वृक्षारोपण क्षेत्र में बढ़ेगा। सुरक्षित क्षेत्र में होने वाला अंकुरण और पनपने वाले पौधों के सुरक्षित बड़े पौधों के रूप में विकसित होने की संभावना बढ़ जाती है।

प्राचीन, विशालकाय वृक्षों वाले उष्णकटिबंधीय वन जैव-विविधता की जीती-जागती अनमोल विरासत हैं। इनका संरक्षण वैश्विक प्राथमिकता है। उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता और उससे मानवता को प्राप्त होने वाले सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ बनाये रखना है तो पुराने प्राथमिक वनों का कोई विकल्प नहीं है। इन वनों के प्रमाण-आधारित प्रबंध में निवेश अनिवार्य है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

(9 जनवरी- गुरु गोविंद सिंह जयंती विशेष)

राष्ट्रधर्म, मानव समाज कल्याण एवं नैतिक मूल्यों के प्रबल समर्थक गुरु गोविंद सिंह

पन्नालाल मेघवाल

सिखों के दसवें आध्यात्मिक गुरु गोविंद सिंह वीरता, शौर्य, साहस, त्याग एवं बलिदान की प्रतिमूर्ति थे। उनमें ज्ञान, त्याग, बलिदान, भक्ति एवं शक्ति का अद्भुत मिश्रण था। राष्ट्रधर्म की रक्षा, मानव समाज के उत्थान एवं नैतिक मूल्यों की रक्षा के प्रति दृढ़ संकल्पित थे।

गुरु गोविंद सिंह का जन्म 1966 ईस्वी में पौष माह की शुक्ल पक्ष की सप्तमी को पटना साहिब में हुआ था। उनके पिता का नाम गुरु तेग बहादुर सिंह और माता का नाम गुजरी था। उनके पिता सिखों के नवें गुरु थे।

जब उनके पिता गुरु तेग बहादुर सिंह ने इस्लाम धर्म में परिवर्तित होने से इनकार कर दिया तब नवम्बर 1675 में औरंगजेब ने उनका सर कलम कर शहीद कर दिया तब मात्र 9 वर्ष के गुरु गोविंद सिंह को औपचारिक रूप से सिखों के दसवें गुरु के रूप में 11 नवंबर 1675 ईस्वी में गादी पर बैठाया गया। गुरु गोविंद सिंह पटना में तीर कमान चलाना, बनावटी युद्ध करना इत्यादि खेल खेलते थे जिसके कारण बच्चे उनको सरदार मानने लगे थे।

गोविंद सिंह ने 1699 ईस्वी में वैशाखी के दिन खालसा पंथ की स्थापना की। उन्होंने खालसा पंथ की रक्षा के लिए मुगलों और उनके सहयोगियों से चौदह युद्ध लड़े थे। उन्होंने अपने धर्म की रक्षा के लिए मुगलों से लड़ते हुए पूरे परिवार का बलिदान दिया। उनके दो पुत्रों बाबा अजीत सिंह और बाबा जुझार सिंह ने चमकौर के युद्ध में शहादत दी। वहीं अपने दो पुत्रों बाबा जोरावर सिंह और फतेह सिंह को सरहन्द के नवाब ने जिंदा दीवारों में चुनवा दिया। गुरु गोविंद सिंह का 7 अक्टूबर 1708 ईस्वी में स्वर्गारोहण हुआ। इससे पहले उन्होंने कहा कि गुरु ग्रंथ साहिब ही अब से सिखों के स्थाई गुरु होंगे।

गुरु गोविंद सिंह ने जीवन जीने के पांच सिद्धांत दिए हैं जिन्हें पंच ककार कहा जाता है। गुरु गोविंद सिंह ने सिखों के लिए पांच चीजें अनिवार्य की थी- केश, कड़ा, कृपाण, कंघा, और कच्छा। इसके बिना खालसा वेश पूर्ण नहीं माना जाता है। केश सबसे पहले आते हैं। उन्होंने हर सिख के लिए कृपाण या श्री साहिब धारण करना अनिवार्य कर दिया। वहीं गुरु गोविंद सिंह ने ही खालसा वाणी दी, जिसे वाहेगुरुजी का खालसा, वाहेगुरुजी की फतेह कहा गया।

गुरु गोविंद सिंह बेहद निडर और बहादुर योद्धा थे। गुरु गोविंद सिंह की गिनती महान लेखकों और रचनाकारों में होती है। उन्होंने जाप साहिब, अकाल उस्तत, विचित्र नाटक चंडी चरित्र, शास्त्र नाम माला, अथ पंख्या चरित्र लिख्यते, जफरनामा और खालसा महिमा जैसी रचनाएं रची। विचित्र नाटक उनकी आत्मकथा माना जाता है। गुरु गोविंद सिंह की कृतियों के संकलन का नाम दसम ग्रंथ है।

गुरु गोविंद सिंह ने कहा था कि जहां पांच सिख एकत्र होंगे वहीं वे निवास करेंगे। गुरु गोविंद सिंह ने समाज में आत्म सम्मान तथा निडर रहने की भावना पैदा की। उन्होंने कहा कि किसी भी व्यक्ति को डरना नहीं चाहिए और न ही उसे दूसरों को डराना चाहिए। गुरु गोविंद सिंह का जीवन दर्शन था कि धर्म का मार्ग सत्य का मार्ग है। ईश्वर ने मनुष्य को इसलिए जन्म दिया है ताकि वे संसार में अच्छे कर्म करे और बुराई से दूर रहे। मनुष्य का मनुष्य से प्रेम ही ईश्वर की भक्ति है।

यदि आज भारत में सद्भाव, भाईचारा एवं धर्म स्थापित है तो उसका पूरा श्रेय गुरु गोविंद सिंह को जाता है। गुरु गोविंद सिंह ने कहा था– मन में साधु बनो, व्यवहार में मधुरता लाओ

गुरु गोविंद सिंह

और भुजाओं में सैनिक की वीरता लाओ। तब उन्होंने संत सिपाही का नारा दिया और वे स्वयं सबसे पहले संत सिपाही बने।

गुरु गोविंद सिंह की जयंती को प्रकाश पर्व के रूप में भी मनाया जाता है। आज देश में जगह-जगह खालसा पंथ की झांकियां निकाली जाती है। इस दिन खासतौर पर लंगर का आयोजन किया जाता है। आज के दिन पटना साहिब गुरुद्वारे में संगतों की भारी भीड़ उमड़ती है। इस गुरुद्वारे में गुरु गोविंद सिंह से जुड़ी सभी चीजें मौजूद हैं।

सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव ने लंगर व्यवस्था लागू की थी। सिख धर्म के सभी दस गुरुओं ने देश ही नहीं पूरे विश्व में आपसी सद्भाव, प्रेम एवं भाईचारे का संदेश देते हुए मानव-मानव को समान माना। सिख धर्म के सभी धर्म गुरुओं का संदेश है कि कोई व्यक्ति बड़ा और छोटा नहीं है, सभी मनुष्य समान है।देश में व्याप्त जाति व्यवस्था एवं ऊंच-नीच समाप्त करने के लिए यह लंगर व्यवस्था लागू की थी, जो 550 वर्षों से अनवरत चली आ रही है। इस लंगर व्यवस्था से देश-विदेश के लाखों जरूरतमंद व्यक्तियों को भोजन उपलब्ध हो रहा है ।

देश विदेश में जहां भी आपदा आती है। सिख धर्म के अनुयायी मानव सेवा के लिए जुट जाते हैं। चाहे भूकंप हो, बाढ़ हो कोविड-19 कोरोना काल या किसान आंदोलन हो, सिख धर्म के अनुयायियों ने बढ़-चढ़ कर मानव सेवा की है। कोरोना काल में सिख धर्म के दानवीरों ने कोरोना पीड़ित लोगों को चिकित्सा सुविधा, दवाइयां, गैस सिलेंडर एवं भोजन उपलब्ध कराने का उल्लेखनीय कार्य किया। देश में संकट काल के समय सिख धर्म के अनुयायियों ने तन-मन-धन से मानव सेवा करके आपसी सौहार्द, सद्भाव एवं भाईचारे की मिसाल कायम की है।

पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार

वन क्षेत्र में मादा लेपर्ड शावक का शव मिला

करौली/मण्डरायल, (निसं)। मण्डरायल रेंज के ओंड़ क्षेत्र स्थित झिरी भोमपुरा गांव के नाले के पास लेपर्ड के शावक का शव मिलने से सनसनी फैल गई। लेपर्ड का शव वन विभाग की टीम करौली पशु चिकित्सालय लेकर पहुंची है। जहां पोस्टमार्टम कराया गया।

- **मण्डरायल रेंज के ओंड़ क्षेत्र स्थित झिरी भोमपुरा गांव के नाले के पास शव मिला**
- **शव को वन विभाग की टीम करौली पशु चिकित्सालय लेकर पहुंची, पोस्टमार्टम कराया**

करौली पशु चिकित्सालय में मादा लेपर्ड के शव का चिकित्सकों की टीम ने पोस्टमार्टम किया।

करौली उप वन संरक्षक टेरिटोरियल सुमित बंसल ने बताया कि पशु चिकित्सकों के दल द्वारा शनिवार दोपहर 12 बजे पोस्टमार्टम कराया गया। उन्होंने बताया कि लेपर्ड शावक की मौत के कारणों का खुलासा पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही होगा। वन क्षेत्र मे मिला मादा लेपर्ड शावक शव दो से तीन दिन पुराना बताया जा रहा है। आठ माह के लेपर्ड शावक की मौत शॉक के कारण होना सामने आया। पोस्टमार्टम के दौरान करौली तहसीलदार धीरेंद्र कर्दम, रेंजर श्याम सुंदर शर्मा, करौली थाना अधिकारी रामेश्वर दयाल, पशु चिकित्सक एमएल मीणा, शिवराम सांवरिया, विनोद बैरवा आदि मौजूद रहे।

भाई की मौत पर बहन ने दी मुखाग्नि

टोंक, (निसं)। टोंक शहर के 20 वर्षीय विद्यार्थी की बैंगलोर से अपने घर लौटते समय हृदयाघात होने से निधन की खबर लगते ही टोंक शहर में शौक लहर दौड़ गई। वहीं जब टोंक शहर में युवक का शव का दाह संस्कार किया तो उसकी बहन ने मुखाग्नि दी।

जानकारी के अनुसार टोंक शहर के आदर्श नगर निवासी राजेश साहू का पुत्र अक्षत साहू पढ़ने के लिए बैंगलोर गया था और वहां से अपने घर के लिए आने की तैयारियां कर रहा था कि गुरुवार को अचानक उसके हृदयाघात होने से मौत हो गई। जिसका शनिवार को अन्तिम संस्कार देवली रोड स्थित सिंधी शमशान घाट पर किया गया। अक्षत के कोई भाई नहीं होने पर उसके अन्तिम संस्कार कार्यक्रम छोटी बहन ने करवाया। यह माहौल देखकर मौके पर मौजूद सब लोगों के आंखों से आंसू नहीं रुक पाए।

पूनिया ने एक माह का वेतन छात्रावास की कन्याओं की पढ़ाई के लिए दिया

बाड़मेर, (निसं)। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां ने बाड़मेर में किसान छात्रावास पहुंचकर स्व. रामदान चौधरी की मूर्ति पर माल्यार्पण कर विद्यार्थियों को संबोधित किया साथ ही अपना एक महीने का वेतन किसान छात्रावास में कन्याओं की पढ़ ई के लिए देने की घोषणा की। डॉ. पूनियां ने प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य व पूर्व युवा मोर्चा अध्यक्ष दलपत मेघवाल के जैसलमेर निवास स्थान पर पहुंचकर उनके स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ली व जल्द स्वस्थ होने की कामना की।

डॉ. पूनियां ने दलपत मेघवाल को उपचार के लिए 50 हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की। 7 और 8 जनवरी को जैसलमेर जिले में संगठनात्मक बैठकें और एफपीओ का उद्घाटन कर शाम को बाड़मेर जिले के संगठनात्मक प्रवास पर पहुंचे डॉ. सतीश पूनियां 9 जनवरी को विभिन्न संगठनात्मक बैठकों में पदाधिकारी और प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ संवाद करेंगे इसके अलावा बाड़मेर के प्रमुख मंदिरों और मठों में दर्शन करेंगे।

- **जैसलमेर में डॉ. पूनियां ने प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य दलपत मेघवाल को उपचार के लिए 50 हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की**

जैसलमेर में पूनिया पर पुष्प वर्षा कर लोगों ने स्वागत किया।

राशिफल रविवार 9 जनवरी, 2022

पंडित अनिल शर्मा

पौष मास शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2078, रेवती नक्षत्र सोमवार प्रात: 8:49 तक, वणिज करण दिन 11:09 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मीन, मंगल-वृश्चिक, बुध-मकर, गुरू-कुम्भ, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

आज भद्रा दिन 11:09 से रात्रि 11:47 तक रहेगी। आज गुरू गोविन्द सिंह जयन्ती, भानु सप्तमी, पंचक, मुनि गजेन्द्र सुरिश्वर जन्म प्रिस्तुतिक (जैन)।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:40 से 9:58 तक, लाभ-अमृत 9:58 से 12:24 तक, शुभ 1:52 से 3:10 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:46

मेष
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भय है। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

धनु
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ने का भय है। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता से प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यक्तिगत सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

कन्या
घर-परिवार में सुख-सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल बना रहेगा। आपसी सहयोग-समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आज मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

मिथुन
महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

तुला
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन हो सकता है। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार हो सकता है। विवादित मामलों से राहत मिलेगी।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आज महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। व्यक्तिगत कार्य क्षेत्र के लिए यात्रा संभव है।

कर्क
परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। आज धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

वृश्चिक
परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है।

मीन
व्यक्तिगत कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। शुभ कार्यों में धन खर्च हो सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। आज महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।